# इंदौर के सिरपुर तालाब में पक्षी दर्शन

**डॉ. किशोर पंवार**

सिरपुर एक तालाब है जो इंदौर से लगभग सटा हुआ है। यह धार रोड़ पर स्थित है। इसे तत्कालीन होल्कर शासकों ने इंदौर के लोगों को पीने का पानी उपलब्ध कराने हेतु बनवाया था। मैं अक्सर प्रकृति का आनन्द लेने कभी सुबह तो कभी शाम यहां जाता रहता हूं अपने कुछ प्रकृति प्रेमी मित्रों के साथ।

इन दिनों सिरपुर तालाब पर प्रकृति पूरे शबाब पर है। शांत निर्मल पानी, छोटी-छोटी पहाड़ियां, तालाब की पाल पर लगे तरह-तरह के छोटे-बड़े पेड़-पौधे, पानी पर तैरती जलीय वनस्पतियां, शीतल मंद पवन के झोंके और तरह-तरह के रंग-बिरंगे पक्षी इसकी सुंदरता को चार चांद लगा रहे हैं।

इस समय यहां हज़ारों प्रवासी पक्षियों ने डेरा डाल रखा है। नज़ारा सूर्योदय का हो या सूर्यास्त का, सिरपुर में दोनों मनोहारी हैं। प्रवासी पक्षियों की प्रमुख आवास स्थली होने के कारण इसे नगर निगम और पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को, भोपाल) द्वारा संयुक्त रूप से संरक्षित एवं सौन्दर्यीकृत किया जा रहा है। सिरपुर के पक्षियों पर स्थानीय समाचार पत्रों में जानकारी लगातार प्रकाशित होती रहती है। इसे पढ़कर इंदौर के प्रकृति एवं पक्षी प्रेमी यहां खिंचे चले आते हैं।

पिछले दिनों एक शाम मैंने यहां एक अद्‌भुत नज़ारा देखा - पश्चिम दिशा से हज़ारों की संख्या में छोटे-छोटे काले परिंदों के झुंड चले आ रहे थे। देखते-देखते सारा आकाश लगभग काला हो चला था। सिर पर चन्द्रमा अपनी आभा बिखेर रहा था। हज़ारों की संख्या में मंडराने वाले ये पक्षी, और कोई नहीं, प्रवासी अबाबील थे जो चंद्रमा की रोशनी में हवा में उड़ते छोटे-छोटे कीटों को अपना शिकार बना रहे थे।

सिरपुर तालाब पर स्थानीय और प्रवासी दोनों तरह के पक्षी देखे जा सकते हैं। हमारे द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि यहां लगभग 57 प्रकार के वॉटर फाउल यानी जल में या जल के करीब रहने वाले पक्षी पाए जाते हैं। इनके अलावा स्थलीय पक्षियों का भी यहां बड़ा जमावड़ा है। यहां लगभग 120 प्रकार के पक्षियों को अलग-अलग समय और स्थान पर निहारा जा सकता है। हालांकि एक ही समय शायद आपको 40-45 से ज़्यादा प्रकार के पक्षी न दिखें। इनकी संख्या में बदलाव मौसम, पानी की मात्रा एवं आसपास होने वाले व्यवधान के कारण होते हैं। शीत ऋतु में पक्षियों की संख्या मेहमान परिंदों के कारण अचानक बढ़ जाती हैं। वहीं बारिश में इनकी संख्या बहुत कम हो जाती है।

इन पक्षियों की चर्चा और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि इनमें से कुछ पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। बर्ड लाइफ इंटरनेशनल के अनुसार एशिया महाद्वीप में पाई जाने वाली 2,700 पक्षी प्रजातियों में से 323 पर विलुप्तीकरण का साया मंडरा रहा है। इनमें अकेले हमारे देश की 73 प्रजातियां है। यह खतरा मुख्य रूप से मानव क्रियाकलापों के कारण पैदा हुआ है जो विकास के नाम पर चल रहे हैं।

खैर, जो पक्षी बचे हैं उन्हें ही निहार लें और उन्हें ही बचाने का प्रयास करें। बचाने के लिए उन्हें पहचानना भी तो ज़रूरी है। यह काम जन आंदोलन चलाकर ही किया जा

सकता है। इस हेतु यह ज़रूरी है कि आम लोग प्रकृति से जुड़ें, परिंदों को देखें और उनकी सुन्दरता को सराहें, उनकी विविधता की दाद दें, उनका संरक्षण करें।

सिरपुर पर पानी में खिलने वाले कमल पत्तों पर ब्रांच्ड विंग्ड जैकाना और फेज़ेन्ट टेल्ड जैकाना को चहल कदमी करते देखा जा सकता है। इन्ही पत्तों पर कॉमन मूर हेन, पर्पल मूर हेन (जामुनी जलमुर्गी), पनकौवा और तरह-तरह के बगुले (जैसे गाय बगुला, छोटा बगुला, अंधा बगुला) भी इधर-उधर किनारों पर या फिर बेशरम की टहनियों पर बैठे दिख जाते हैं।

सिरपुर की पाल की दाईं तरफ बड़ा सिरपुर है जहां पानी ज़्यादा, वनस्पति कम है। यहां तैरने वाले पक्षियों का डेरा जमा हुआ है। इनके झुंड के झुंड इधर-उधर तैरते रहते हैं। कुछ प्रवासी समूहों में काली कूट (तिलक दंसरी) ज़्यादा हैं तो कुछ समूह प्रवासी पिनटेल (सींक पर) के हैं। पिनटेल के बीच-बीच में रेड क्रेस्टेड पोचार्ड, शावलर (खंतिया), स्पॉट बिल (धूसर बतख) भी तैरते रहते हैं। कहीं-कहीं कॉटन टील और रंगीन मलार्ड भी हैं। किनारों के पास दो-तीन जोड़े प्रसिद्ध बतख सुरखाब के भी हैं। पीले-बादमी रंग की यह बहुत सुंदर बतख है जिसे ब्राह्मणी बतख भी कहते हैं। ये प्रवासी हैं और ऊंचे हिमालयी क्षेत्र तिब्बत और लद्दाख से यहां आई हुई हैं। बतखों के बीच-बीच में या फिर किनारों पर किसी पत्थर पर बैठे अपने पंख सुखाते काले पनकौवे (कार्मोरेंट) यहां सैकड़ों की तादाद में मिलते हैं।

इस कृत्रिम झील के उत्तरी किनारे पर जहां पानी कम और हायड्रिला, कारा, रिबन जैसी पत्तियों वाला वेलिस्नेरिया, स्किरपस और सायप्रस जैसी जलीय वनस्पतियां ज़्यादा हैं वहां कम पानी और कीचड़ पर आश्रित, किनारे के पक्षी जिन्हें वेंडर्स कहा जाता है, प्रमुखता से विचरण करते रहते हैं। इनमें से अधिकांश को पानी में अपनी लंबी पतली चोंच घुसाए कुछ ढूंढते देखा जा सकता है।

वेंडर्स में ब्लेक विंग्ड स्टिल्ट (गज पांव) प्रवासी, कॉमन स्टिंक्ट, सैंडपाइपर, प्लवर दिखाई देते हैं। कभी-कभी एक बड़ी सफेद चिड़िया जिसकी चोंच चमचे जैसी होती है, भी दिखाई देती है। यह है चमचा बाज़ या स्पूनबिल। इसे

देखकर ऐसा लगता है कि प्रकृति ने इसके मुंह पर एक बड़ा चम्मच कीचड़ खंगालने के लिए लगा दिया है। यहां यदा-कदा प्रेम के प्रतीक सारस क्रेन (लोहित सिर सारस) के जोड़े भी दिखते हैं। और पिछले साल तो मई में आश्चर्यजनक रूप से तीन चार ग्रेटर फ्लेमिंगो (राजहंस) भी सिरपुर पर दिखाई दिए। उल्लेखनीय है कि ये अधिकतर कच्छ, केरल और मुम्बई के दलदली समुद्री किनारों पर पाए जाते हैं।

इनके अलावा पेंटेड स्टॉर्क, ओपन बिल स्टॉर्क, पर्पल हेरोन (अंजन), कभी-कभी ब्लैक एण्ड व्हाइट आयबिस भी देखने को मिल जाती हैं। तालाब की पाल पर टहलते-टहलते आसपास लगे खजूर, बबूल, कायजेलिया (झाड़फानूस), नीम, पीपल, बरगद, अमलतास, केसिया आदि पेड़ों पर तोते, हरे पतिंगे, बुलबुल, तरह-तरह की मैना (जैसे कामन मैना, ब्राह्मणी मैना), रोज़ी स्टरलिंग, काला भुजंगा, कोयल, धनेश (हार्नबिल) भारद्वाज (क्रो फेज़ेन्ट), बसन्ता (बारबेट), कठफोड़वा (वुडपेकर), मधरंगा (किंग फिशर), नीलकंठ (इंडियन रोलर) आदि पक्षियों के दर्शन होते रहते हैं। सर्दी के दिनों में विभिन्न प्रकार के प्रवासी खंजन, लार्क, इंडियन पाइपिट आदि भी यहां बड़ी संख्या में आते हैं।

कुल मिलाकर सिरपुर प्रकृति प्रेमियों एवं पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग है। इंदौर का सिरपुर तो एक उदाहरण मात्र है। चर्चित एवं वर्णित पक्षी आपको अपने आसपास के तालाबों, नदी-नालों व खेत-खलिहानों के आसपास भी ज़रूर मिलेंगे। ज़रूरत बस उन्हें ध्यान व शांति से देखने की है। वे हमारी प्रकृति के रंगीन व संगीतमय साथी हैं जिनकी कूक और चहचहाहट के बिना हमारी दुनिया अधूरी है। तो फिर देर किस बात की। जब भी फुर्सत मिले कोई एक अच्छी से पुस्तक एवं एक दूरबीन लेकर निकल पड़िए आसपास के किसी सिरपुर पर। और फिर देखिए कि ये दुनिया की कितनी हसीन है। ***(स्रोत फीचर्स)***